इकाई 20 साम्राज्य और राष्ट्र-राज्य-2: रूसी साम्राज्य और सोवियत संघ

इकाई की रूपरेखा

20.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप जान सकेंगे कि:

- रूसी साम्राज्य पिछली इकाई में विवेचित अन्य दोनों साम्राज्य से किस प्रकार अलग था;
- रूसी साम्राज्य अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं को अपने भीतर कैसे एकीकृत कर सका;
- प्रथम विश्व युद्ध के बाद साम्राज्य से अलग हुई इन अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं को सोवियत संघ किस प्रकार पुनर्एकीकृत कर सका।

20.1 प्रस्तावना

पिछली इकाई में आप पढ़ चुके हैं कि कैसे औटोमन और हैब्सबर्ग साम्राज्य अपनी बहु-राष्ट्रीय बनावट के भार से और उभरते राष्ट्रवादी आंदोलनों की चुनौतियों के कारण ध्वस्त हो गए। इस इकाई में, हम विचार करेंगे कि रूसी साम्राज्य किस प्रकार अन्य दो साम्राज्यों से भिन्न था और युद्ध के बाद बिखरने के बावजूद किस प्रकार नया बना सोवियत संघ अपनी संघटक इकाइयों को साथ रखने में सफल रहा।

20.2 अन्य साम्राज्यों से अंतर

राष्ट्रवाद के युग में रूसी साम्राज्य ने अपनी बहुराष्ट्रीय बनावट की सभी दिक्कतों का सामना किया; और युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद विजेता अपना हिस्सा मांगने लगे थे। परंतु यह दोनों साम्राज्यों से कई मामलों में अलग था।

पिछली इकाई में आपने पढ़ा कि कैसे औटोमन और हैब्सबर्ग साम्राज्य अपनी बहुराष्ट्रीय बनावट के भार से और उभरते राष्ट्रवादी आंदोलनों की चुनौतियों के कारण ध्वस्त हो गए। इस इकाई में हम विचार करेंगे कि किस प्रकार रूसी साम्राज्य अन्य दो साम्राज्यों से भिन्न था और किस प्रकार युद्ध के बाद टूटने के बावजूद इसके उत्तराधिकारी राज्य सोवियत संघ इसके अधिकांश संघटक इकाइयों के एकीकृत करने में सफल रहा।

सबसे पहली बात यह है कि रूसी राज्य ने प्रभावी ढंग से आधुनिकीकरण को अपनाया और 1914-1918 की बड़ी विपदाओं के अलावा उसने कोई बड़ा युद्ध नहीं हारा। केवल 1854-1856 में क्रीमिया के युद्ध में यह ब्रिटेन और फ्रांस से हार गया था; परंतु इससे उसके किसी क्षेत्र पर कब्जा नहीं जमाया गया; सजा के रूप में बीस वर्षों के लिए काले सागर का असैन्यीकरण कर दिया गया। इसके बाद 1904-05 के रूस-जापान युद्ध में रूस को बड़ी हार का सामना करना पड़ा। परंतु यहां भी रूस सखालिन का आधे से कम हिस्सा ही जापान से हारा था और जापान में भी इतनी ताकत नही रह गई थी कि वह और ज्यादा हिस्से के लिए जोर लगाए। इसके अलावा नेपोलियन के खिलाफ 1812 और 1814-15 में, 1848 में हंगेरियाई क्रांति में, और 1812, 1829 और 1877-78 में औटोमन साम्राज्य में रूस को भारी सफलता हाथ लगी; इन सभी जीतों के साथ कूटनीतिक सफलताएं भी हाथ लगीं। 19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में काकेशस पर विजय प्राप्त की, मध्य एशिया में 1820 से 1880 तक, 1858-1860 में साइबेरिया के पूर्वी समुद्री तट, अमुर और उसुरी नदियों के उत्तर क्षेत्र में विजय प्राप्त की। इसके अलावा 1880 के बाद से कोरिया और चीनी साम्राज्य के मंचुरिया में साम्राज्यवादी घुसपैठ की। हैब्सबर्ग और औटोमन साम्राज्य की तुलना में रूसी साम्राज्य अन्तरराष्ट्रीय मसलों में कम उलझा।

दिए गए वर्ष में रूसी साम्राज्य और सोवियत संघ की राष्ट्रीयताएं

	1719		1897		1989	
	हजारों में	%	हजारों में	%	हजारों में	%
कुल	**15,764.8**	**100.00**	**125,640.0**	**100.00**	**285,743**	**100.00**
रूसी	11,127.5	70.58	56,665.5	44.31	145,155	50.80
यूक्रेनियाई	2,025.8	12.85	22,380.6	17.81	44,186	15.46
बेलोरूसी	382.7	2.43	5,885.6	4.68	10,036	3.51
कुल पूर्वी स्लाव	**13,536.0**	**85.86**	**83,933.7**	**66.80**	**199,377**	**69.77**
वोल्गा ततार	293.1	1.86	1,834.2	1.46	6,649	2.33
शुवाश	217.9	1.38	843.8	0.67	1,842	0.64
मौर्डोवियन	107.4	0.68	1,023.8	0.81	1,154	0.40
शेरेमिश	61.9	0.39	375.4	0.30	671	0.23
वोटियाक	48.1	0.31	420.8	0.33	747	0.26
बश्किर	171.9	1.09	1,321.4	1.05	1,449	0.51
तेप्तियार	22.6	0.14	117.8	0.09		
कुल वोल्गा/उराल	922.9	5.85	5,937.2	4.73	12,512	4.37
स्टोनियन	309.2	1.96	1,002.7	0.80	1,027	0.36
लैटवियन	162.2	1.03	1,435.3	1.14	1,459	0.51
फिनिश	164.2	1.04	143.1	0.11	69	0.02

स्वीडिश	8.0	0.05	14.2	0.01		
पोलिश			7,931.3	6.31	1,126	0.39
लिथुआनियन			1,659.1	1.32	3,067	1.07
यहूदी			5,063.2	4.03	1,449	0.51
मोल्डावियन/ रोमानियन			1,121.7	0.89	3,498	1.22
बुल्गारियन			172.5	0.14	373	0.13
गैगस			55.8	0.04	198	0.07
कुल पश्चिम	643.6	4.08	18,598.9	14.81	9,711	3.40

(स्रोत : एन्ड्रेस कैपलर, रसलैंड आल्स वियेलविलकेरिच, एन्ट्सटेहंग, गेशिशे, जेरॅफॉल वेरलाग सी.एच.बेक, मैनशेन, 1992, तालिका 3, पृष्ठ संख्या 323-325)

रूसी जनसांख्यिकी उत्कृष्टता स्पष्ट थी; और वहां स्लावों का भी वर्चस्व था। परंतु साम्राज्य के उत्तरार्ध में, पूरा अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दियों में, साइबेरिया, बेसर्बिया (सोवियत संघ का मोल्डाविया) और अन्ततः मध्य एशिया में साम्राज्य के विस्तार और गैर-रूसियों को शामिल किए जाने से इस स्थिति में परिवर्तन आया। यह रूसियों के लिए राष्ट्रवादी चिंता का स्रोत बना जिससे विदेशी द्वेष पनपा। बाल्टिक को छोड़कर रूसी और स्लाव सामाजिक और आर्थिक दृष्टि से सबसे ज्यादा विकसित थे। रूसी साम्राज्य में स्पष्ट रूप से कुछ लोगों का वर्चस्व था; हैब्सबर्ग और औटोमन साम्राज्यों में ठीक-ठाक स्पष्ट नहीं हो पाता था कि वर्चस्व किसका था।

तीसरे रूसी शाही राज्य या तानाशाही व्यवस्था के पास अपना रूसी रूढिवादी चर्च था और यहां दुनिया की सबसे बड़ी रूढिवादी ईसाई जनता रहती थी; इस व्यवस्था को कोई चुनौती देने वाला नहीं था। इससे राज्य में धार्मिक निष्ठा अविभाजित थी। दूसरी ओर, अन्य दोनों साम्राज्यों के मामले में, दोनों धर्मों (रोमन कैथेलिक और इस्लाम) के केंद्र और इस धर्म को मानने वाले अधिकांश लोग साम्राज्य के बाहर स्थापित थे। रूस को एक लाभ यह भी मिला कि रूसी रूढिवादी चर्च अठारहवीं शताब्दी के आरंभ से ही पूरी तरह राज्य के अधीन था और किसी अन्य मंत्रालय की तरह एक नौकरशाह इसके कार्यों को देखता था।

चौथा; साम्राज्य में रूसी राष्ट्रीयता ने सबसे पहले अपने को आधुनिक तर्ज पर राष्ट्र के रूप में परिभाषित किया और इस आधार पर पूरे रूसी साम्राज्य के निर्माण का प्रयत्न किया। जहां तक हैब्सबर्ग का संबंध है, हैब्सबर्ग राजतंत्र के जर्मन राष्ट्रवादी के रूप में शासन करने या वर्चस्व स्थापित करने की आशा नहीं कर सकते थे, हालांकि उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में ही जर्मन राष्ट्रवाद परिभाषित हो चुका था। जर्मन राष्ट्रवाद के कारण वे पहले प्रशा की ओर और बाद में जर्मन साम्राज्य की ओर झुके, जिसके बाद हैब्सबर्ग की रक्षा में कोई राष्ट्रवाद नहीं बच गया। औटोमन साम्राज्य के मामले में, तुर्की राष्ट्रवाद कम से कम किसी बाहरी राष्ट्र के प्रति निष्ठावान नहीं हुआ था जैसा कि हैब्सबर्ग राजतंत्र के जर्मनों के साथ हुआ था। परंतु तुर्की राष्ट्रवाद, सभी बाल्कन राष्ट्रवादों के तय होने और स्वतंत्र राज्य बनने के बाद देर से, 1870 के दशक के बाद से विकसित हुआ। रूसी राष्ट्रवाद ने पूरे साम्राज्य के रूसीकरण का प्रस्ताव रखा था परंतु तर्की राष्ट्रवाद में गैर-तुर्कियों के तुर्कीकरण की कोई योजना नहीं थी। तुर्की में आधुनिकीकरण में हुई देरी से यह स्पष्ट है, जहां तंजीमात युग (1839-1879) में प्रशासनिक आधुनिकीकरण के बावजूद राजनैतिक शक्तियां ज्यादातर राजवंशीय और ऐतिहासिक समस्याओं पर ही ज्यादा आश्रित थी।

अब पांचवा अंतर। अनेक महत्वपूर्ण पराजयों के बाद भी रूसी साम्राज्य प्रथम विश्व युद्ध के बाद ही टूटा। इसके बाद, उत्तर-साम्राज्यिक क्रांतिकारी सोवियत राज्य फिनलैंड, बाल्टिक, पोलैंड ओर बेसरबिया (सोवियत संघ में मोल्डोविया) के अलावा साम्राज्य के अधिकांश हिस्से को सोवियत संघ में बनाए रखने में सफल रहा।

परंतु नवम्बर 1939 और मार्च 1940 में हुए सोवियत-फिनलैंड युद्ध में सोवियत संघ ने लेनिनग्राद के उत्तर के फिनलैंड राज्य क्षेत्र के हिस्से पर फिर से कब्जा जमा लिया। अक्टूबर 1939 में, सोवियत संघ ने वर्तमान पोलैंड के सीमांत तक फैले पूर्वी पोलैंड के अधिकांश हिस्से पर कब्जा जमा लिया। 23 अगस्त 1939 को तथाकथित नाजी-सोवियत संधि के जरिए जर्मनी से पोलैंड के बंटवारे से संबंधित समझौता हुआ। 1940 में, सोवियत संघ में निम्न निम्न शामिल थेः पूरा बाल्टिक, बेसारबिया (मोल्डोविया) जो 1918-40 से रोमानिया का अंग था; बुकोविना जो 1918 के पहले हैब्सबर्ग में और 1918-40 में रोमानिया में था और पूर्वी गलाशिया जो 1918 के पहले हैब्सबर्ग और 1918-40 में पोलैंड के अधीन था। द्वितीय विश्वुयद्ध के दौरान इनमें से अधिकांश क्षेत्रों पर जर्मनों का अधिकार हो गया था परंतु 1944 में इसे वापस ले लिया गया था। द्वितीय विश्वयुद्ध की अंतिम विजय के साथ सोवियत संघ ने दो और क्षेत्रों पर कब्जा कर लिया— एक को पूर्वी प्रशिया कहा जाता था जो लिथुआनिया और पोलैंड के बीच पड़ता था और दूसरा टुकड़ा गलाशिया के दक्षिण चेकोस्लोवाक देश का था। यह पुनर्गठन दो चरणों में हुआ जिससे क्रांति की ताकत और रूसी राष्ट्रीयता के वर्चस्व का पता चलता है। यह चेकोस्लोवाकिया और युगोस्लाविया और बहु-राष्ट्रीय राज्यों के समान बड़ी शक्तियों के निर्णयों से प्रभावित नहीं हुआ था।

20.3 राष्ट्रीय जागरण

अठारहवीं शताब्दी के अंत से लेकर 1840 के दशक तक रूस के राष्ट्रीय जागरण की प्रक्रिया आधुनिक साहित्य और भाषा के साथ फली-फूली। महान कवि एलेक्जेन्डर पुश्किन की कविता, महान रूसी इतिहासकार एन-एम. करमजीनिस के रूसी राज्य के महान इतिहास, सेर्जेई सोलोविविस द्वारा रचित रूस के विवरणात्मक इतिहास और लोक साहित्य संबंधी शोध प्रबंधों के जरिए राष्ट्रवाद का स्वरूप सामने आया। 1840 के दशक से राष्ट्रीय बुद्धिजीवी वर्ग का उदय हुआ जिन्होंने रूसी राष्ट्र और रूसी सभ्यता के अर्थ और उद्देश्य पर लगातार बहस की। वी.जी. बेलिन्सिकी और एलेक्जेंडर हेर्जेन जैसे पश्चिमवादी तथा के. आक्साकोव, आई. किरीविस्की और ए. खोमियाकोव जैसे स्लावभक्त इनमें प्रमुख थे। राज्य की तरफ से शिक्षा मंत्री सर्जेइ उवारोव ने रूसी राष्ट्रीय अस्मिता को परिभाषित किया और आधुनिकीकरण के बेहतर तरीके के रूप में गैर रूसियों के रूसीकरण की आवश्यकता पर बल दिया। इसके लिए प्रशासन, कानून और सामाजिक ढांचे में केंद्रीकरण और एकरूपता लागू करने की बात की गई। रूसी राज्य के पास इस एकरूपता को कायम करने के लिए रूसी रूढ़िवादी चर्च के रूप में एक प्रमुख औजार मौजूद था।

हालांकि अन्य राष्ट्रीयताओं ने भी लगभग उसी समय यही कार्य अपने लिए किए। 1820 के दशक में स्टोनियाई और लैटवियाई संस्कृतियों ने अपने साहित्य, इतिहास और लोक साहित्य को रचने की कोशिश की; 50 के दशक में इन भाषाओं में समाचार पत्र प्रकाशित हुए; और 70 तथा 80 के दशक में राष्ट्रीय अधिकारों के लिए राजनैतिक आंदोलन चलाए गए। पोलैंड से अलग करके ही लिथुनियाई राष्ट्र को परिभाषित किया जा सकता था। वे रेजपोस्पोलिटा से गहरे रूप से जुड़े हुए थे जो कि 14वीं और 18वीं शताब्दियों में पोलिश-लिथुनियाई साम्राज्य का नाम था। हालांकि इसकी संस्कृति के बारे में काफी कुछ काफी पहले ही लिखा जा रहा था परंतु लिथुनियाई राष्ट्र के लिए अलग से राष्ट्रीय कार्यक्रम 1860 के दशक में 1863 के पोलिश विद्रोह के बाद ही सामने आया। बेलोरूस का मामला भी अपने आप में अनूठा है। 1807 और 1809 में आकर बेलोरूस की भाषा का निर्माण हुआ। परंतु अगले दशक में जान बार्जविस्की ने आधुनिक साहित्य की शुरुआत कर दी। हालांकि रूसी और पोलिश बेलोरूसियों को लिथुनियाई मानते थे क्योंकि दोनों का धर्म रोमन कैथोलिक था। 1860 के दशक में ही रूसी राष्ट्रवादियों को यह पता चला या वे आश्वस्त हुए कि रूसियों के समान बेलोरूसियों की भी अपनी भाषा और लोक साहित्य मौजूद था। राष्ट्रीय कवि तराश शेवचेनको की साहित्यिक उपलब्धियों के साथ ही 1840 के दशक में यूक्रेन की आधुनिक और राष्ट्रीय पहचान बनी। इसी के तुरंत बाद 50 के दशक से राजनैतिक नियति के विचार का प्रतिपादन किया गया। वोल्गा क्षेत्र में पचास के दशक में तातार को शिहाबेद्दिन मार्झानी के रूप में एक राष्ट्रीय इतिहासकार प्राप्त हुआ; अब्दुल कयूयूम नासीरी (1825-1902) ने साहित्यक भाषा की रचना की; और 1880 के दशक से एक क्रीमियाई तातार,

इस्माइल बे गास्प्राली (गसप्रिंस्की) (1851-1914) ने एक सरलीकृत भाषा का निर्माण किया, एक प्रभावी पत्र की शुरुआत की और पानतुर्किज्म (अखिल तुर्कीवाद) के नाम से एक राजनैतिक कार्यक्रम की शुरुआत की।

रूसी साम्राज्य में विभिन्न प्रकार की राष्ट्रीय अस्मिताओं के एक साथ उभरने से अब निष्ठा सम्राट के प्रति न होकर प्रत्येक राष्ट्र के प्रति हो गई। मात्र सम्राट के प्रति निष्ठा के आधार पर एकता और सुरक्षा कायम नहीं की जा सकती थी (हैब्सबर्ग में भी यही समस्या थी); इसे रूसी राष्ट्र से जुड़ा और आधारित होना था। परंतु उभरते गैर रूसी राष्ट्रवादियों के लिए यह संभव न थाः इसलिए इन रूसी गैर रूसी राष्ट्रवादियों का रूसीकरण ही एकमात्र उपाय था। रूस में यह संभव दिखाई देता था क्योंकि वहां रूसी लोग अधिक थे और वहां उनकी सर्वोच्चता भी स्थापित थी (हैब्सबर्ग राजतंत्र के जर्मनीकरण से यहां स्थिति भिन्न थी)। इस नीति के तहत रूसी अधिकारी, रूसी भाषा और रूसी रूढ़िवादी चर्च को आरोपित करने की प्रक्रिया शुरू हुई। आज हमें यह निरर्थक प्रयास लग सकता है परंतु उन दिनों जब राष्ट्रों की शुरुआत हो रही थी तब यह संभव लग रहा था क्योंकि इंगलिश ने अपने को स्कॉटलैंड और वेल्स पर, आरोपित किया था, आधिकारिक तौर पर फ्रांस ने अभी हाल में ही फ्रांस में भी यही किया था और हंगरी में माग्यार, स्लोवाकों, क्रोटों और सर्बों पर हावी होने का प्रयत्न कर रहे थे। एकीकरण की समस्या के साथ आधुनिकीकरण का लक्ष्य भी जुड़ा हुआ था। इसके लिए केंद्रीकरण और एकरूपता की जरूरत थी। रूसीकरण ही इस एकरूपीकरण का एकमात्र उपाय था क्योंकि गैर-राष्ट्रीय केंद्रीकरण का हैब्सबर्ग नमूना घातक भी था और अन्तरविरोधों से युक्त भी था, जैसा कि आप पहले पढ़ चुके हैं। लंबे समय तक शिक्षा मंत्री रहे सेरजी युवारोव के सामने यही विकल्प और मुद्दे थे जिसके आधार पर उसे यह प्रक्रिया शुरू करनी थी।

20.4 पोलिश संस्कृति का रूसीकरण

पोलिश भाषा और पोलिश संस्कृति से जुड़े धर्मों पर आक्रमण कर पश्चिम में रूसीकरण की शुरुआत हुई। इनमें रोमन कैथेलिक और यूनिएट शामिल थे (यूनिएट चर्च की स्थापना 1956 में हुई जिसने रोमन कैथेलिक और रूढ़िवादी मतों को एक में मिला दिया, परंतु पदानुक्रम में यह रोम के पोप से नीचे था और इस कारण रूस में इसे संदेह की निगाह से देखा जाता था)। 1831 में पोलिश विद्रोह के बाद रोमन कैथोलिक मतों को कड़ाई से दंडित किया गया क्योंकि पोलैंड एक कैथोलिक राष्ट्र था। स्थानीय स्वशासन को दबा दिया गया, प्रशासन, न्यायालयों और विद्यालयों में रूसी भाषा आरोपित की गई और लिथुआनिया की राजधानी विलना स्थित विलना विश्वविद्यालय को बंद कर दिया गया और रोमन कैथेलिक मठों में ताले लगा दिए गए। यूक्रेन, बेलोरूस (इसे श्वेत रूस के नाम से भी जाना जाता था) और लिथुआनिया में भी इसी प्रकार के पोलिश विरोधी सांस्कृतिक कदम उठाए गए। रूसी साम्राज्य में धीरे-धीरे मिलाए जाने के पहले ये सभी क्षेत्र 14-18वीं शताब्दियों में पोलिश-लिथुआनियाई साम्राज्य, रेक्पोस्पोलिटा के हिस्से थे। रूसी कानून द्वारा लिथुआनियाई अधिनियम के स्थान पर रूसी कानून लागू किया गया, और यूनिएट चर्च को 1839 में दबा दिया गया; यूक्रेन और बेलोरूस में इसके अनुयायियों की संख्या काफी अच्छी थी। रूढ़िवादी चर्च ने लिथुआनियाई और बेलोरूसी किसानों के बीच धर्मान्तरण की हवा चलानी चाही परंतु उन्हें कोई खास सफलता नहीं मिली। इसके बावजूद वर्ग संरचना को नहीं छेड़ा गया, कृषिदास प्रथा यथावत रही और पोलैंड के प्रभावशाली लोग अपने विशेषाधिकारों का उपयोग करते रहे। इस प्रकार के साम्राज्यों की यह विशिष्ट समस्या थी; राष्ट्रवादी और वर्ग नीतियां अलग दिशाओं में बढ़ीं और कभी-कभी ये अंतरविरोधपूर्ण भी हो सकती थीं। पूर्व-आधुनिक साम्राज्य कभी भी हमेशा राष्ट्रवादी नहीं बना रह सकता।

1863 के पोलिश विद्रोह के बाद 1860 के दशक में इस प्रकार की एक नई लहर पैदा हुई। रोमन कैथोलिक चर्च को एक बार फिर से दबाया गया और रूसी भाषा को प्राथमिक विद्यालयों तक में आरोपित कर दिया गया। चूंकि बेलोरूस और लिथुआनिया पोलैंड से भिन्न था अतः तानाशाही एक राष्ट्रवाद से भिड़ने लगी। 1860 के दशक से रूसी राष्ट्रवादियों ने बेलोरूसी भाषा को बढ़ावा देना शुरू किया और किसानों को बेलोरूसी भाषा में पर्चे बांटे गए कि वे अपने को रूसी कहें। इसी के साथ-साथ स्थानीय क्रांतिकारियों ने किसानों को

एकजुट करने और रोमन कैथोलिक पुरोहितों ने रूढ़िवादी आक्रमण को रोकने के लिए इसी भाषा का उपयोग किया। इसके फलस्वरूप एक उपेक्षित और तिरस्कृत बेलोरूसी भाषा का उल्लेखनीय विकास हुआ। दूसरी लहर 1905-1097 की क्रांति के दौरान उठी। बेलोरूसी राष्ट्रवाद एक प्रमुख सांस्कृतिक ताकत के रूप में उभरा परंतु दूसरे राष्ट्रवादों की तुलना में यह राजनैतिक दृष्टि से बहुत मजबूत नहीं था। इस दृष्टि से यह रूसी राज्य के लिए आदर्श था। इसने लोकप्रिय क्षेत्रीय चेतना का संचार किया, इसने पोलिश संस्कृति को दरकिनार कर दिया परंतु यह रूसी राज्य में बना रहा।

लिथुआनिया की स्थिति तानाशाही सरकार के लिए ज्यादा जटिल थी। पोलिश लोगों का नौकरी में और खासकर लिथुआनिया में चर्च पदानुक्रम में दबदबा था; अतः 1860 के दशक के बाद से लिथुआनिया के पुरोहित पोलिश-विरोधी राष्ट्रवादी के रूप में उभरे। रूसी सरकार खुश थी परंतु यह राष्ट्रवाद रूसियों के भी उतने ही खिलाफ था। रूसी सरकार ने अपनी रूसीकरण नीति के तहत लिथुआनियाइयों को नौकरी दिए जाने पर प्रतिबंध लगा दिया, इसके बावजूद चर्च पदानुक्रम में काफी लोग प्रवेश कर गए। इसी प्रकार लिथुआनियाई रोमन कैथोलिक चर्च बुद्धिजीवियों, और अति राष्ट्रवादियों का आधार बन गया और रूस तथा पोलिश राष्ट्रवाद के प्रति शत्रुतापूर्ण रवैया रखना शुरू कर दिया। निश्चित रूप से यह रूसी राज्य के लिए एक समस्या थी; परंतु इससे उसे लाभ भी हुआ। यह लिथुआनियाई राष्ट्रवाद रूढ़िवादी और समाजवाद विरोधी था। इस क्षेत्र के समाजवादी दो दलों में संगठित हुए; ये दल थे — 1) 1892 में स्थापित जोसेफ पिलसुडस्की का पोलिश समाजवादी दल और 2) 1893 में पोलैंड और लिथुआनिया राज्यों के सामाजिक जनतंत्री (सोशल डेमोक्रेट्स)। दोनों पोलैंड के साथ संघीय व्यवस्था चाहते थे जबकि लिथुआनियाई रूढ़िवाद और राष्ट्रवादी पोलिश मेलजोल के विरोधी थे। रूसी तानाशाही के दो प्रबल शत्रुओं, पोलिश राष्ट्रवाद और पोलिश समाजवाद, पर नियंत्रण रखने के लिए लिथुआनियाई राष्ट्रवाद बहुत उपयोगी था; परंतु इससे रूसी साम्राज्य की एकता को भी नुकसान पहुंचा।

20.5 बाल्टिक का रूसीकरण

बाल्टिक देश में भी ऐसी ही परिस्थिति पैदा हुई परंतु वहां राष्ट्रीयताएं और धर्म अलग-अलग थे। बाल्टिक को आज एस्टोनिया, लाटिविया और लिथुआनिया के नाम से जाना जाता है; परंतु 1918 से पहले यह अलग-अलग सीमाओं के साथ ऐतिहासिक प्रांतों में विभक्त थे और इसके हिस्सों को एस्टलैंड, लिफलैंड (लिवोनिया) और कुरलैंड (कोरलैंड) के नाम से जाना जाता था। 12वीं और 13वीं शताब्दियों में जर्मनों ने इस पर कब्जा जमाए रखा था; तब से शासकीय वर्ग जर्मन था, नौकरशाही में रूसी और जर्मन शामिल थे और किसान तथा आम आदमी एस्टोनियाई और लैटवियाई थे। बाल्टिक के जर्मन सामंत रूसी प्रजा थे और रूस के सम्राट के प्रति पूर्ण रूप से निष्ठावान थे। यूरोप के ही समान वे सामंती कुलीन वर्ग के विशेषाधिकारों का उपयोग कर रहे थे, हालांकि 1816-1819 में उनके कृषिदास स्वतंत्र हो चुके थे। सभी जगह जर्मन भाषा का उपयोग किया जाता था, वे अपनी न्याय व्यवस्था चलाते थे और वे सभी प्रकार की शिक्षा और पेशेवर रोजगार पर नियंत्रण रखते थे। काम काज ठीक ढंग से चलाने के लिए रूसी राज्य उनसे सहयोग चाहता था। लेकिन शिक्षा मंत्री, उवारोव ने चेतावनी दी कि बाल्टिक जर्मनों को दिया जाने वाला विशेषाधिकार रूसी तानाशाही (राज्य) के लिए खतरा था। स्लाव प्रेमियों के एक प्रभावशाली गुट और राष्ट्रवादी विचारधारा ने उसका समर्थन किया। बाल्टिक जर्मनों ने कभी भी कोई आक्रामक रुख नहीं अपनाया, परंतु पोलिश विद्रोह से राष्ट्रवाद की ताकत और खतरे का पता लग गया; और आधुनिकीकरण के लिए हर स्तर पर एकरूपता की आवश्यकता थी। अतः रातोरात बाल्टिक सामंत शक के घेरे में आ गए।

सबसे पहले स्टोनियाई ओर लैटवियाई किसानों को प्रोटेस्टेंट से रूसी रूढ़िवादी धर्म में परिवर्तित किया जाना था ताकि अपने जर्मन अधिपतियों से उनका सम्पर्क टूट जाएं (जो प्रोटेस्टेंट थे) और उन्हें तानाशाही (रूसी राज्य) और रूस के साथ जोड़ा जा सके। 1836 में रिगा (उस समय लिवोनिया और अब लैटविया की राजधानी) में एक रूढ़िवादी केंद्र (बिषप का क्षेत्र) की स्थापना की गई और 1845-47 में लगभग एक लाख किसानों को धर्मांतरित किया गया। हालांकि इनमें से अधिकांश 1860 में फिर अपने धर्म में लौट आए क्योंकि

इससे उन्हें कोई फायदा नहीं हुआ था। रूसी राष्ट्रवादी बाल्टिक विशेषाधिकारों के खिलाफ शोर मचाते रहते थे; परंतु सम्राट उन पर नियंत्रण रखने में सफल रहा क्योंकि वह अस्थिरता के खतरे से पूरी तरह अवगत था परंतु राष्ट्रवाद एक उभरती हुई शक्ति थी जिसका उपयोग रूसी राज्य ने खुद साम्राज्यिक एकीकरण के लिए किया; और 1870 के दशक से बाल्टिक विशेषाधिकार समाप्त किए जाने लगे। जर्मन सामंत वर्ग अपनी जागीर और नैगमिक सरकारों में प्रतिबंधित सम्पत्ति मताधिकार के जरिए शासन करते थे; और सभी किसानों (स्टोनियाई और लैटवियाई थी) ने जब इस मताधिकार को विस्तार देने की बात की तो उसे नामंजूर कर दिया गया। परंतु 1877 में निगम के चुनावों के लिए सम्पत्ति विषयक योग्यता को अधिक विस्तृत कर दिया गया और पहली बार राजनैतिक संघर्ष में गैर जर्मन शामिल हुए। 1852 में रूसी नगर निगम कानून पूरी तरह बाल्टिक में लागू कर दिया गया। 1888 के दशक से रूसीकरण के व्यापक अभियान के तहत बड़ी संख्या में जर्मन अधिकारियों को पदमुक्त कर दिया गया। स्टोनियाई और लैटवियाई याचिकाओं को स्थगित रखा गया और अन्ततः 1888-1889 में न्यायिक प्रशासन, स्कूलों के नियंत्रण और जर्मन भाषा के उपयोग से संबंधित पुराने बाल्टिक जर्मन विशेषाधिकारों जिन्हें *प्रिवेलिजियम सिगिसमुंडी अगस्ती* के नाम से जाना जाता था, को निरस्त कर दिया गया। इस प्रकार तानाशाही सरकार ने बाल्टिक जर्मन विशेषधिकारों के खिलाफ स्थानीय राष्ट्रवाद का उपयोग किया। परंतु 1890 के दशक में एक क्रांतिकारी आंदोलन की शुरुआत हुई जो 1905-1907 की महान क्रांति में तब्दील हो गई; स्टोनियाई, लैटवियाई राष्ट्रवाद के रूप में किसान और मजदूरों की क्रांति सामने आई। अतः तानाशाही सरकार ने एक वर्ग के रूप में जर्मनों का साथ देना शुरू कर दिया। इस प्रकार इस नीति का दो धारी तलवार के रूप में उपयोग किया गया; स्थानीय राष्ट्रवादों को जर्मनों के खिलाफ भिड़ाया गया और स्थानीय किसानों और मजदूरों के खिलाफ जर्मन वर्ग हितों को बचाने का प्रयास किया गया। यह अन्तरविरोध कभी भी दूर नहीं हो सका।

20.6 यूक्रेन का रूसीकरण

काफी दिनों तक यूक्रेनियाई भाषा पर प्रतिबंध लगा रहा और सोसाइटी ऑफ सेंट सिरिल और मेथोडियस (1847) जैसे राष्ट्रवादी संगठनों को दबाया गया। सभी स्तरों पर रूसी भाषा आरोपित की गई। यूक्रेनियाई भाषा में लिखी पुस्तकों पर भी प्रतिबंध लगाया गया; तब जाकर यूक्रेनियाई राष्ट्रवाद अपने को रंगमंच के द्वारा अभिव्यक्त करने लगा। लेकिन यूक्रेनियाई राष्ट्रवादी भागकर सीमा पार गैलेशिया चले गए जो हैब्सबर्ग राजतंत्र की सीमा में था; वहां उनका गर्मजोशी के साथ स्वागत हुआ। जिस प्रकार रूसी राज्य ने पोलों के खिलाफ लिथुआनियाई और बाल्टिक जर्मन के खिलाफ लैटिवाइयों तथा एस्टोनिआइयों को आगे बढ़ाया था ठीक उसी तरह हैब्सबर्ग राजतंत्र ने पोलिश राष्ट्रवाद और संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के खिलाफ गैलेशिया के रूथेन्स लोगों के बीच यूक्रेनियाई राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया। हैब्सबर्ग 1780 के दशक से ही इस खेल में लगा हुआ था; परंतु 1848 के बाद इसकी गति और भी तेज हो गई। इस प्रकार यूक्रेनियाई राष्ट्रवाद रूसी साम्राज्य के यूक्रेनियाई राज्य-क्षेत्र में तो दबा दिया गया परंतु हैब्सबर्ग साम्राज्य में खूब फला-फूला। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद गैलेशिया को अन्ततः यूक्रेन में मिला लिए जाने के बावजूद यह क्षेत्र पूरी तरह राष्ट्रवादी और यूक्रेन का सोवियत विरोधी हिस्सा बना रहा।

20.7 फिनलैंड का रूसीकरण

फिनलैंड रूसी साम्राज्य का हिस्सा था परंतु उसका एक विशेष स्थान था। नेपोलियन युद्धों के दौरान 1809 में इसे स्वीडेन से प्राप्त किया गया था। इसका विशेष संविधान था जिसमें कुछ जनतांत्रिक अधिकार भी उपलब्ध कराए गए थे, और यह साम्राज्य का मात्र एक प्रांत नहीं था बल्कि एक बृहद राज्य-क्षेत्र था जिसे ग्रैन्ड डची के नाम से भी जाना जाता था। देश में स्वीडिश सांस्कृतिक वर्चस्व इतना जबरदस्त था कि सच्चे अर्थो में पहला फिनिश व्याकरण विद्यालय 1858 में ही खुल सका। इसके बाद रूसी नीति का सार स्वीडिश भाषा और संस्कृति के स्थान पर फिनिश भाषा और संस्कृति को बढ़ावा देना था और 1902 में दोनों को सरकारी भाषा बना दिया गया। 1899 में फिनलैंड रूसी राष्ट्रवादी केंद्रीकरण की चपेट में आ गया जैसा कि 1880 के

दशक में बाल्टिक में हुआ था। अब रूसी भाषा भी आरोपित कर दी गई; 1907 के बाद स्वायत्तता का हनन किया गया; और 1910 से रूसी ड्यूमा (संसद) फिनलैंड के लिए भी कानून बनाने लगी। एक बार फिर फिनलैंड के विशेष संविधान पर आक्रमण किया जाने लगा। रूसी साम्राज्य के खिलाफ किसी राष्ट्रवादी राजद्रोह के कारण ऐसा नहीं किया गया बल्कि यह साम्राज्यिक आधुनिकीकरण और एकीकरण की राष्ट्रवादी रणनीति की मांग थी। लेकिन जिस साम्राज्य के विघटन को रोकने के लिए यह सब कुछ किया जा रहा था, उसी को इसने तेज कर दिया।

बोध प्रश्न 1

1) रूसी साम्राज्य किन अर्थों में औटोमन और हैब्सबर्ग साम्राज्यों से अलग था ?

....

....

....

....

....

2) अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं के रूसीकरण की प्रक्रिया में रूढ़िवादी चर्च की भूमिका पर विचार कीजिए।

....

....

....

....

....

20.8 सोवियत पुनर्एकीकरण

युद्ध और उसमें हुई हार के कारण हैब्सबर्ग और औटोमन साम्राज्यों के समान रूसी साम्राज्य का अनेक राष्ट्र-राज्यों में विघटन नहीं हुआ। परंतु पश्चिमी रूसी साम्राज्य में नए राष्ट्र-राज्य अवश्य बने (फिनलैंड, एस्टोनिया, लैटविया, लिथुआनिया, पोलैंड और रोमानिया के हिस्से के तौर पर बेसरबिया/मोल्डेविया) और बाकी सोवियत संघ के तहत राष्ट्र-राज्य का संघीय गणतंत्र बन गए। यूरोपीय रूस में ऐसे क्षेत्र यूक्रेन, और बेलोरूस थे परंतु 1945 के बाद पौलेंड के अतिरिक्त अन्य सब भी संघीय गणराज्य बन गए। हैब्सबर्ग और औटोमन साम्राज्यों से इन प्रक्रियाओं में क्या अंतर है और इसमें क्या शामिल था ?

रूसी साम्राज्य ने भी अन्य दो साम्राज्यों के समान कई दुविधाओं और अन्तरविरोधों का सामना किया। ऐसा लग सकता है युद्ध में हारने के बावजूद मित्र-राष्ट्रों अर्थात विजेताओं के साथ रहने के कारण इसे फायदा हुआ और दूसरों की तरह यह टूटने से बच गया। परंतु ऐसी बात थी नहीं क्योंकि जर्मनों और मित्र-राष्ट्रों दोनों पक्षों ने रूसी साम्राज्य और इसके उत्तराधिकारी बोलोशेविक राज्य को तोड़ने का प्रयास किया था।

अक्टूबर 1917 में हुई बोलशेविक क्रांति के समय तक रूसी सेना जर्मन सेना से बुरी तरह पराजित हो चुकी थी; इसके बाद उन्होंने मार्च 1918 में बोलशेविक सरकार पर ब्रेस्ट-लिटोव्स्क की संधि आरोपित की जिसके द्वारा रूसी साम्राज्य के पश्चिम प्रदेश सोवियत राज्य से अलग कर दिए गए। यह बाल्टिक, पोलैंड और यूक्रेन पर लागू हुआ। औटोमन सरकार ने काकेशस में बिलकुल ऐसा ही किया था जहां अप्रैल-मई 1918 में ज्योर्जिया, अरमेनिया और अजरबैजान नामक तीन स्वतंत्र राज्यों की स्थापना की गई। औटोमनों ने अरमेनिया को रौंद दिया; अजरबैजान और ज्योर्जिया क्रमशः औटोमन और जर्मन आश्रित राज्य बन गए। जर्मन और
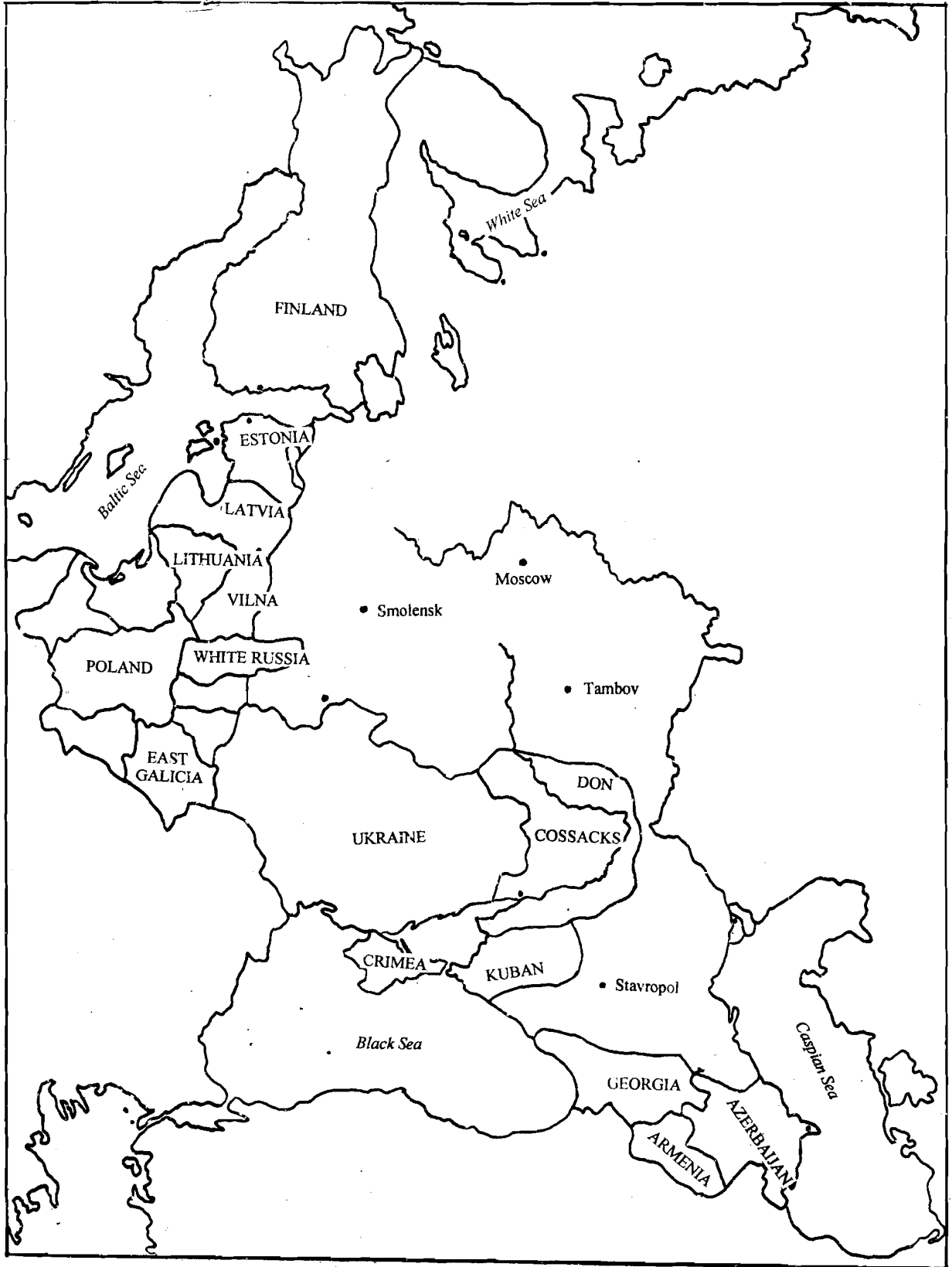
मानचित्र 7: सीमांत प्रदेश, 1919-20

औटोमन सरकारों ने बिलकुल वही किया था जो बाद में वर्साय की संधि (प्रथम विश्व युद्ध के बाद) में किया गया, अपने विरोधियों के राज्य-क्षेत्रों को तोड़ा गया और कई आश्रित राज्यों का निर्माण किया गया।

परंतु मित्र राष्ट्रों ने बोलशेविक राज्य पर आक्रमण कर एक ऐसी सरकार को स्थापित करने का प्रयत्न किया जो पूरब में युद्ध जारी रखे ताकि वह जर्मनी से अलग से शांति समझौता न करें जैसा कि बोलशेविकों ने मार्च 1918 में किया था। अतः 1918 के मध्य में रूसी गृह युद्ध शुरू होते ही ब्रिटेन मध्य एशिया के काकेशस में और उत्तर में बोलशेविक सरकार को अपदस्थ करने का षड्यंत्र करने लगा। अमेरिकी ओर जापानी कई स्थानों पर कई बार भिड़ चुके थे। दोनों कभी साम्राज्य को तोड़ने का तो कभी जोड़ने का प्रयास करते थे; दोनों की नीतियों में स्थिरता नहीं थी। इस प्रकार ब्रिटिश और जर्मनों ने एस्टोनिया (फरवरी 1919) और लाटविया (फरवरी 1920) की आजादी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लिथुआनिया ने अपने बल पर जुलाई 1920 में आजादी हासिल की; परंतु युद्ध के समय जर्मन आधिपत्य से काफी मदद मिली। फिनलैंड ने 1918 के मध्य में बोलशेविकों के खिलाफ शुद्ध राष्ट्रवादी स्वतंत्रता संग्राम छेड़कर स्वतंत्रता प्राप्त की। ये सारी घटनाएं विभिन्न दलों के बीच पूर्ण युद्ध का परिणाम थीं जिसमें राष्ट्रवाद की विजेता मोर्चे को लामबंद करने की क्षमता की परीक्षा की गई।

यहां तक दोनों साम्राज्यों की कहानी एक सी है; परंतु सोवियत संघ का क्या हुआ ? यहां पर हम सोवियत संघ के यूरोपीय हिस्से की बात कर रहे हैं; परंतु इससे यह पता चलता है कि राष्ट्रवादी लामबंदी के आधार पर सोवियत संघ का निर्माण और रक्षा कैसे की गयी ।

इसमें निम्नलिखित तत्व शामिल थे; हालांकि अलग-अलग गणतंत्रों में थोड़ी बहुत विभिन्नताएं मौजूद थीं;

1) भाषा, इतिहास और संस्कृति के आधार पर एक राष्ट्रीय क्षेत्र की पहचान की गई, और इसे सोवियत संघ का संघटक गणतंत्र बना दिया गया। पूर्व-क्रांतिकारी अवधि में किसी प्रकार का राष्ट्रीय क्षेत्र नहीं था, केवल कुछ प्रशासनिक प्रांत थे जिनका राष्ट्रीयता से कोई संबंध नहीं था। यह अंतर भारत में औपनिवेशिक प्रशासनिक विभाजन और बाद में भारतीय संघ के भाषाई राज्यों के निर्माण के समान ही था।

2) इसके बाद गणतंत्र की भाषा को स्थानीय उपयोग के लिए राजभाषा बनाया गया और रूसी भाषा को शेष सोवियत संघ से सम्प्रेषण की भाषा बनाया गया।

3) पूरे सोवियत संघ में व्यापक स्तर पर साक्षरता अभियान चलाया गया ताकि उस राष्ट्रीयता के और ज्यादा सदस्य अपनी भाषाओं को मानकीकृत रूप में पढ़ना, लिखना और बोलना सीख सकें और सभी स्तरों पर इसे इस प्रकार लागू किया जा सके जैसा इतिहास में कभी न किया गया हो।

4) प्राथमिक से लेकर उत्तर-माध्यमिक शिक्षा के लिए संम्पूर्ण शिक्षा की व्यवस्था की गई ताकि राष्ट्रीयताओं के सदस्य अपने सांस्कृतिक परिवेश में ही, उच्च शिक्षा, ज्ञान और संस्कृति को हासिल कर सकें।

5) संग्रहालय, नाट्यशालाएं, प्रकाशन गृहों, रेडियो तथा बड़े समाचार पत्रों जैसी सभी प्रकार की राष्ट्रीय सांस्कृतिक संस्थाएं स्थापित की गई।

6) यथासंभव स्थानीय रोजगार में स्थानीय राष्ट्रीयताओं के लोगों को प्राथमिकताएं दी गई; इस प्रक्रिया को इनाशिवाइजेशन या कोरेनिजाट्सिया के नाम से जाना जाता था।

इन सबको मिलाकर राष्ट्रवादियों की उपलब्धियां महत्वपूर्ण थीं। परंतु 20 के दशक में (1920) में उन्हें निम्नलिखित अनिवार्य शर्तो का पालन करना था:

1) सभी नागरिकों को सोवियत राज्य के प्रति निष्ठावान होना होगा और साम्यवादी दल की तानाशाही के साथ-साथ इसकी धर्म विरोधी आक्रामकता को भी स्वीकार करना होगा।

2) गुप्तचर विभाग और रक्षा सेवा जैसी सुरक्षा की दृष्टि से संवेदनशील नौकरियों में रूसियों का नियंत्रण था और गणतंत्र के बड़े नेताओं पर निगरानी रखने के लिए हमेशा कुछ रूसियों को रखा जाएगा।

इस प्रकार राष्ट्रवादियों को रूसी साम्राज्य और बोलशेविकों को हटाने की इच्छा रखनेवाली प्रति-क्रांतिकारी शासन व्यवस्थाओं की तुलना में अपनी आशा से बढ़कर प्राप्ति हुई। असल में, श्वेत सेना जो गृह युद्ध में बोलशेविक विरोधी प्रमुख ताकत थी, रूसीकरण की स्थापना और रूसी साम्राज्य पर रूसी राष्ट्रीय आधिपत्य से आगे कुछ सोच ही नहीं सकती थी। मित्र-राष्ट्रों ने गृह युद्ध में इन ताकतों को समर्थन दिया। 1920 के दशक के राष्ट्रवादियों के लिए, क्रांतिकारी राजनीति के तमाम उलट-फेर और उठा-पटक के बावजूद, बोलशेविकों ने अंतरराष्ट्रीय संप्रभुता को छोड़कर लगभग सभी कुछ प्रदान कर दिया। इसके साथ ही किसानों और मजदूरों के प्रति बोलशेविकों के उग्र सुधारों ने किसानों और मजदूरों का ही नहीं पूरी जनता का समर्थन प्राप्त कर लिया। जनता को संघ में लामबंद करने के लिए समाजवाद को राष्ट्रवाद के साथ जोड़ दिया गया। तात्कालिक रूप से बोलशेविकों को उस समस्या का समाधान मिल गया जो साम्राज्यों के पास नहीं था।

20.8.1 बेलोरूस

मार्च 1921 में बेलोरूस सोवियत समाजवादी गणतंत्र की स्थापना हुई। पहली बार सोवियत परिसंघ के सदस्य के रूप में ही सही पर बेलोरूस राज्य का अस्तित्व कायम हुआ। पोलैंड द्वारा पश्चिम जिलों पर कब्जा कर लिए जाने के कारण राष्ट्रवादी अप्रसन्न थे; परंतु अगस्त में हुए नाजी सोवियत संधि के तहत अक्टूबर 1939 में इसे भी वापस ले लिया गया। इस प्रकार राष्ट्रवादियों को अपना पूरा देश साबुत प्राप्त हुआ।

इसके बाद शाही रूसी राज्य द्वारा किए रूसीकरण के बदले उस क्षेत्र में संस्कृति का बेलोरूसीकरण हुआ। इस प्रकार बेलोरूसी भाषा इस गणतंत्र की राजभाषा बन गई; इसे मानकीकृत किया गया; और प्रशासन के कई स्तरों पर रूसी पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इसके बाद उन्नीस अखबारों और पत्रिकाओं तथा शिक्षण, शोध और प्रकाशन जैसी संस्थागत व्यवस्थाओं के जरिए (इसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है) एक राष्ट्रीय संस्कृति का निर्माण किया गया। निर्वासित राष्ट्रवादी प्रभावित हुए। अक्टूबर 1925 में निर्वासित बेलोरूसी राष्ट्रवादी गणतंत्र सरकार ने बेलोरूसी सोवियत समाजवादी गणतंत्र के पक्ष में अपने को विघटित कर दिया और बेलोरूस को एकमात्र वैधानिक सरकार मान लिया। लास्तोस्की और दोवनार-जापोलस्की जैसे राष्ट्रवादी नेता, जो दूर-दूर तक समाजवादी नहीं थे, घर लौट आए।

20.8.2 यूक्रेन

सोवियत संघ में यूक्रेन को मिलाना सोवियत संघ में राष्ट्रवादी समायोजन की सफलता की परीक्षा थी; यह उग्र राष्ट्रवादी था जहां कई प्रकार की अलगाववादी प्रवृत्तियां मौजूद थी। यह रूस के समान ही विकसित था और कई क्षेत्रों में रूस के समान इसका भी अपना इतिहास था। एक यूक्रेनियाई राष्ट्रीय राज्य की स्थापना हुई; यह राज्य राष्ट्रवादियों के चहेते सत्रहवीं शताब्दी के कोसैक राज्य से भी बड़ा था। इसकी जनता पहले से भी अधिक शिक्षित थी। इसकी राजभाषा यूक्रेनियाई थी और 1920 के दशक में यहां संस्कृति और पेशों का प्रभावशाली यूक्रेनीकरण हुआ था। 1939 और 1945 की युद्ध अवधि में यूक्रेन के इतिहास में पहली बार एक यूक्रेनियाई राज्य के तहत सभी यूक्रेनियाई भाषी क्षेत्रों को एक साथ इकट्ठा किया गया। यूक्रेनियाई गुप्तचर विभाग का निर्माण हुआ, सभी उच्च सांस्कृतिक पदों पर, देश के नेतृत्व पर और जन संचार माध्यमों, अखबारों और रेडियो पर उनका अधिकार हो गया। 1926 तक आधी नौकरशाही पर यूक्रेनियाइयों का अधिकार हो गया; 1927 तक आधा साम्यवादी दल यूक्रेनियाई हो गया। यह कोई छोटी-मोटी उपलब्धि नहीं थी; देश के 70 % लोगों ने यूक्रेनियाई भाषा को अपनी मातृभाषा घोषित किया।

20.8.3 अल्प संख्यक राष्ट्रीयताएं

ततार, बाश्किर और वोल्गा की जनता या काकेशस जैसी छोटी राष्ट्रीयताओं का विकास भी इसी तरह हुआ। इन सभी राष्ट्रीयताओं ने एक राज्य-क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित कर लिया। यहां अपनी भाषा और संस्कृति के विकास की संभावना बढ़ गई तथा स्थानीय, क्षेत्रीय या राष्ट्रीय राजनीति में भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। सबसे बढ़कर बात यह हुई कि जहां मिली-जुली राष्ट्रीयताएं थीं वहां मास्को से दूसरी राष्ट्रीयताओं को स्थानीय वर्चस्व वाली राष्ट्रीयता से संरक्षण भी प्राप्त हुआ।

इस राष्ट्रीयता नीति की एक और विशेषता थी। कुछ राष्ट्रीयताओं को अपने ऐतिहासिक राज्य-क्षेत्र में अल्प मत होने के बावजूद विशिष्ट सुविधाएं और विशेषाधिकार प्राप्त हुए। इस प्रकार ततार, कालमिक्स, कारेलियन, मोरडेविया और काकेशस की कुछ राष्ट्रीयताओं को, जो अल्प मत में थीं, स्वायत्त गणतंत्र या स्वायत्त क्षेत्र प्रदान किया गया। उनकी भाषा और संस्कृति को बढ़ावा दिया गया, उन्हें नौकरी में विशेष छूट दी गई और स्थानीय स्तर पर उन्हें राजनैतिक जीवन में प्रवेश करने का मौका मिला। बहुसंख्यक मत वाले शुद्ध प्रजातंत्र में यह सब सुविधाएं मिलना असंभव था।

20.8.4 1930 के दशक का स्टालिन युग

20वीं शताब्दी में सोवियत संघ ने कुछ इस प्रकार की व्यवस्थाएं की जिससे बहु-राष्ट्रीय संघटन की समस्याओं पर काबू पाया जा सके। परंतु इसके लिए उन राष्ट्रवादियों को प्रमुख रियायतें देने की जरूरत थी जो समाजवादी नहीं थे और बोलशेविक व्यवस्था के खिलाफ थे। 1930 के दशक में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। यह दशक स्टालिन के जबरन औद्योगीकरण, सामूहीकरण, जनसंहार, मजदूर शिविर, मनुष्यकृत भयंकर अकाल, और अन्ततः पार्टी के नाम पर एक सैन्य व्यवस्था की तानाशाही का दशक था।

1920 के दशक की विशेष रियायतें समाप्त कर दी गईं। अब राष्ट्रवाद के उस रूप को बढ़ावा दिया गया जो 'रूप में राष्ट्रवादी और विषयवस्तु में समाजवादी' के नारे के रूप में बदनाम था। सभी गैर समाजवादी या पार्टी से अलग सोच रखने वाले राष्ट्रवादियों को दरकिनार कर दिया गया। पार्टी के निर्देशों का पालन करने के बाद ही वे अपने गणतंत्रों या क्षेत्रों में अपनी संस्कृति और अपनी जीवन शैली जारी रख सकते थे। इस युग में एकरूपता और केंद्रीकरण आरोपित करने की दिशा में कार्य हुआ जो जार के समय में या शाही नौकरशाही और विचारकों की सोच से भी आगे बढ़ गया। जारकालीन तानाशाही ने रूसीकरण की आकांक्षा की थी। समाजवादी नौकरशाहों ने स्टालिनवादी समाजवाद की मांग की। रूसीकरण के द्वारा नहीं बल्कि स्टालिनवादी समाज के जरिए सैद्धांतिक और सांस्कृतिक समरूपता आरोपित करने की कोशिश की गई। यूरोपीय सभ्यता के समानांतर एक नई सोवियत संस्कृति और एक नई सभ्यता का निर्माण किया जाना था। इसमें रूसी सबसे बड़े परंतु एकमात्र घटक थे। परंतु सोवियत विरोधी या धार्मिक होने पर अन्य राष्ट्रवादों की तरह रूसी संस्कृति पर भी आक्रमण किया गया। इस प्रकार रूसियों सहित सभी राष्ट्रवादियों को दंडित किया गया। दूसरी ओर केवल स्टालिनवाद के कड़े सैद्धांतिक और राजनैतिक ढांचे के भीतर राष्ट्रीय गणतंत्र, भाषाएं, सांस्कृतिक संस्थाएं, बुद्धिजीवी वर्ग और राजनैतिक नेतृत्व विकसित होते रहे।

इस शासन व्यवस्था के दमनकारी होने के बावजूद कम्युनिस्ट पार्टी का दामन पकड़कर कोई गैर रूसी भी उन्नति कर सकता था और नेतृत्व में उसकी भागीदारी हो सकती थी। 1917 के पहले के रूसीकरण से यही प्रमुख अंतर था; उस समय कोई गैर रूसी सिद्धांततः रूसी राष्ट्रवादी रूसी साम्राज्य में स्थान पाने की आशा नहीं कर सकता था। अब केवल कम्युनिस्ट बनकर रूसी सहित सभी राष्ट्रीयताओं की बराबरी की जा सकती थी और राष्ट्रीय संस्कृति का विकास किया जा सकता था; परंतु 1917 के पहले गैर रूसी राष्ट्रीय संस्कृति को बढ़ावा देकर रूसी बनना संभव नहीं था। इसलिए स्टालिनवाद के आक्रामक और हिंसात्मक होने के बावजूद इसे राष्ट्रवादी प्रतिरोध का सामना नहीं करना पड़ा। उदाहरण के लिए जर्मन आक्रमण के दौरान यूक्रेन में राष्ट्रवाद की लहर फैल गई; परंतु जर्मन आतंक के कारण वे तेजी से सोवियत राष्ट्र भक्त बन गए। इसलिए 1980 के दशक के अंत में महान प्रेस्त्रोइका के आने तक सोवियत संघ राष्ट्रीय दृष्टि से शांत रहा; इसके बाद संघ टूट गया। सोवियत संघ ने राष्ट्रवाद को दबाने के बजाय उसे लामबंद कर बहु-राष्ट्रीय राज्य का निर्माण किया। फ्रांसीसी क्रांति द्वारा राष्ट्र-राज्यों की यूरोपीय अन्तरराष्ट्रीय व्यवस्था का एक एक मात्र अपवाद था। परंतु इसने भी यह सिद्ध कर दिया कि आधुनिक राज्य और आधुनिक अन्तरराष्ट्रीय संबंध व्यवस्था राष्ट्रवाद पर ही आधारित होनी चाहिए, हालांकि इसके लिए राष्ट्र-राज्य का होना अनिवार्य नहीं था।
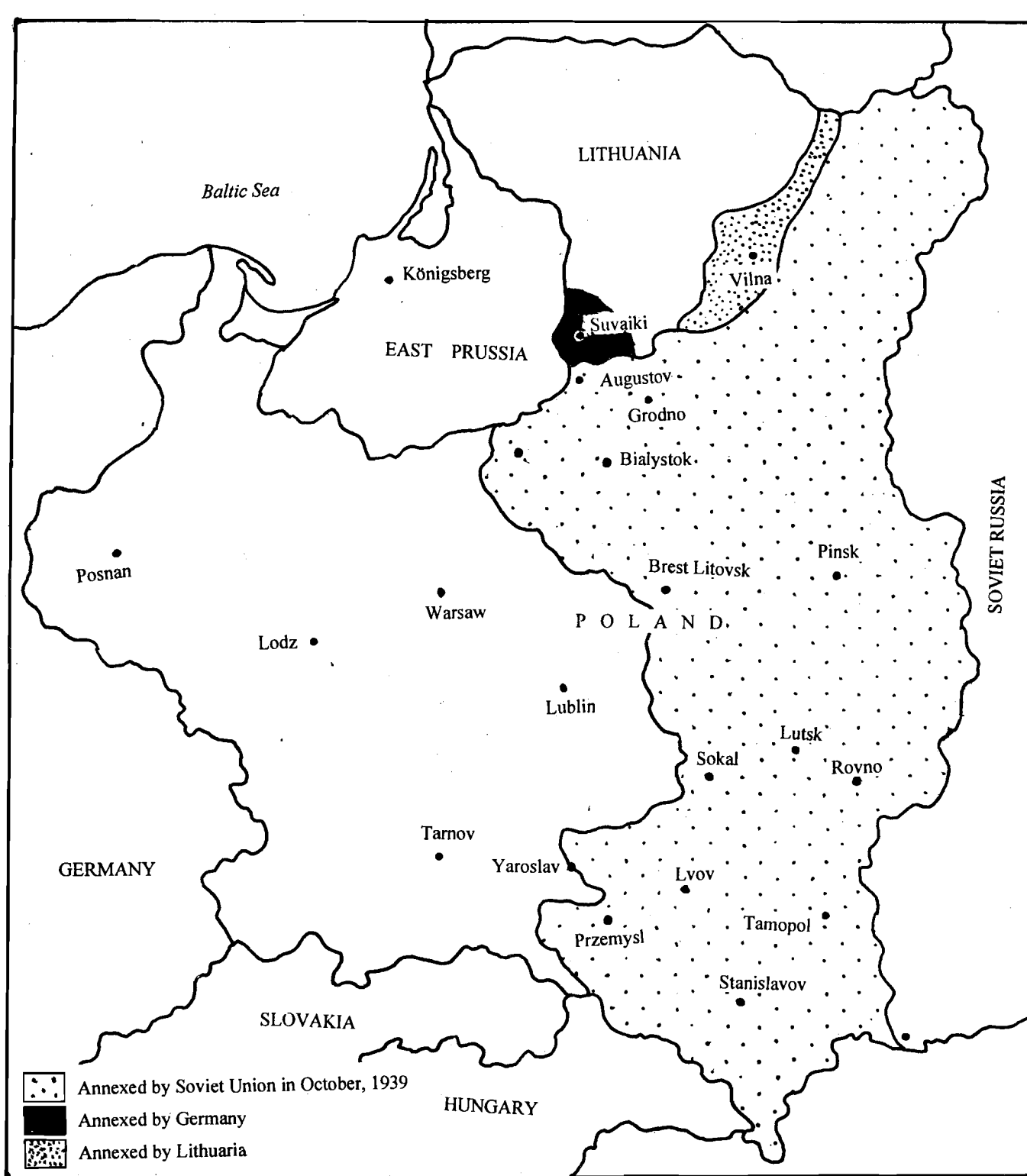
मानचित्र 8 : 1939 में पोलैंड का बंटवारा
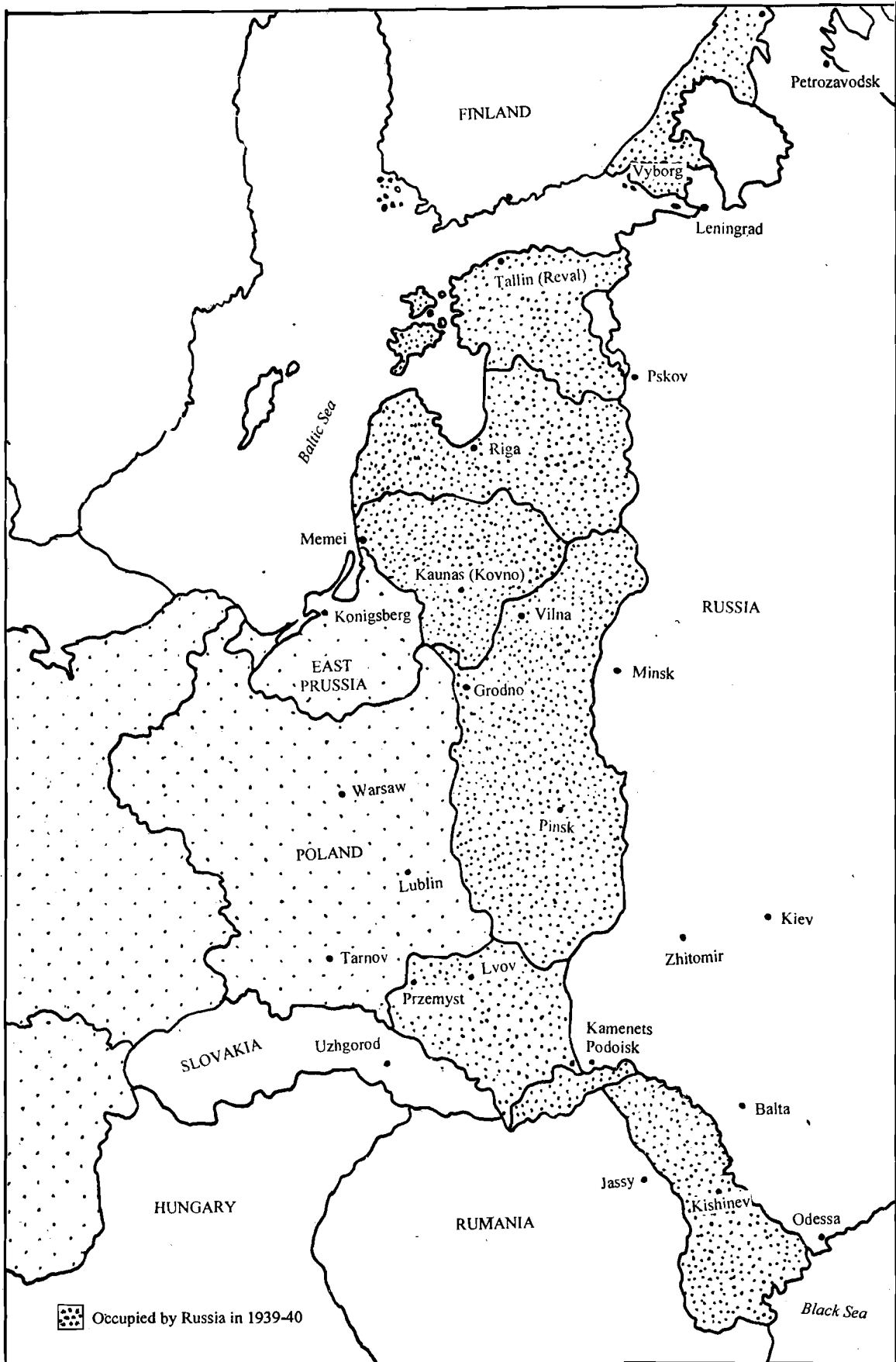
मानचित्र 9 : 1939-40 में सोवियत विस्तार

बोध प्रश्न 2

1) सोवियत संघ किस प्रकार रूसी साम्राज्य से अलग था ?

....

....

....

....

2) स्टालिन के नेतृत्व में सोवियत संघ में राष्ट्रीयताओं के संदर्भ में क्या परिवर्तन आए ?

....

....

....

....

20.9 सारांश

अबतक हुए विचार विमर्श के दौरान आपने यह देखा कि रूसी साम्राज्य अन्य दो साम्राज्यों से कई मामले में अलग था। रूस में आधुनिकीकरण अधिक प्रभावशाली था; युद्ध में इसे कम हानि उठानी पड़ी थी, अन्य राष्ट्रीयताओं के मुकाबले रूसियों की जनसंख्या ज्यादा थी। रूढ़िवादी चर्च की समर्थनवादी भूमिका के कारण अधिकांश लोग धार्मिक रूप से निष्ठावान थे, अल्पसंख्यक राष्ट्रीयताओं का सांस्कृतिक और भाषायिक एकीकरण हुआ तथा रूसी राष्ट्रवाद ने इसमें प्रमुख भूमिका निभाई। प्रथम विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप साम्राज्य के टूटने के बावजूद 20 वर्षों के भीतर सोवियत संघ ने अपनी सभी संघटक इकाइयों को एकल राष्ट्र-राज्य में जोड़ लिया।

20.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 20.2

1) देखिए भाग 20.4, 20.5, 20.6 और 20.7

बोध प्रश्न 2

1) देखिए भाग 20.8

1) देखिए उपभाग 20.8.4

इस खंड के लिए कुछ उपयोगी पुस्तकें

ई.जे. हॅब्सबॉम : *नेशन ऐंड नेशनलिज्म सिन्स 1780: प्रोग्राम, मिथ रियलिटी*

बेनेडिक्ट ऐंडरसन : *इमैजिन्ड कम्युनिटिजः रिफ्लेक्शन ऑन द ऑरिजिन ऐंड स्प्रेड ऑफ नेशनलिज्म*

अर्नेस्ट गेलनर : *नेशन्स ऐंड नेशनलिज्म*

सी.टिली (स0) : *द फॉरमेशन ऑफ नेशनल स्टेट्स इन वेस्टर्न यूरोप*